प्राकृत भाषा अध्ययन : मेरा अनुभव और संभावनाएँ

-डॉ. पुलक गोयल

पाइय-कव्वस्स नमो पाइय-कव्वं च निम्मियं जेण।
ताहं चिय पणमामो पढिऊण य जे वि जाणंति।।

- वज्जालग्ग /गा. 31

सकल विश्व का गुरु भारत... सोने की चिड़िया भारत... जहाँ ज्ञान, विज्ञान, आचार, विचार, अध्यात्म, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों की विशेषज्ञता ही नहीं, अपितु प्रायोगिक रूप से जहाँ इनके उच्चस्तरीय कीर्तिपुरुष विराजते थे। सुख-सुविधा, आनंद, उत्साह, सामाजिक समरसता, उमंग, उत्सव, वैभव, समृद्धि जहाँ पग-पग पर सहज थी। जिसकी सांस्कृतिक ऊँचाइयों को निहारने देश-विदेश से आने वाले खोजी यात्रियों का मेला लगा रहता था। वह स्वर्णिम देश है भारत।

भारत के हजारों वर्ष पुराने वैभव और सांस्कृतिक धरोहर को स्वयं में समाहित कर संरक्षित रखने का महनीय कार्य प्राकृत भाषा में हुआ है। भारतीय साहित्य के विशाल पर्वत की नींव प्राकृत भाषा है। प्राकृत भाषा में जनता बोलती थी और कवि लिखते थे। प्राकृत भाषा में नायिका और नायक का प्रेमालाप होता था। प्राकृत भाषा में माँ का अपने पुत्र अथवा पुत्री से लाड- प्यार और दुलार होता था। प्राकृत भाषा में राज-काज, नीति, न्याय और व्यापार होता था। प्राकृत भाषा में अबोध शिष्य को गुरु पढ़ा कर योग्य बनाते थे। प्राकृत भाषा में ही धर्मोपदेश का आदान-प्रदान होता था। छोटा हो या बड़ा, खरा हो या खोटा, साधु हो या डाकू, सभी का मनोगत प्राकृत भाषा में ही व्यक्त होता था।

भारत की प्राचीन मूल भाषा के रूप में प्राकृत भाषा का आज भी स्मरण किया जाता है। प्राकृत भाषा को सर्वाधिक भारतीय भाषाओं की जननी भी सिद्ध किया गया है भाषा विज्ञानियों के द्वारा। यही वह भाषा थी जिसमें जीवंतता थी, प्रवाह था। प्रगतिवादी, प्रवाहप्रिया, सरल, सुबोध, मनोहर और आकर्षक भाषा होने का दावा भी प्रायः होता है इसके प्रति। यह तरलता, सरलता ही विकास है नदी प्रवाह के समान। स्थिरता विनाश है तालाब के समान।

प्राकृत भाषा क्या है?

प्राचीन भारतीय भूभाग में प्रचलित संस्कृतेतर जन भाषाओं का नाम प्राकृत है। प्राकृत कोई एक भाषा नहीं है, अपितु शैली, उच्चारण आदि की विशेषताओं से सुशोभित अनेक भाषाओं का समूह है। नाम भले ही अनेको हों, पर

परस्पर में बोल-चाल और व्यवहार कराने में सक्षम है। प्राकृत अध्ययन कराते समय जो बहुविकल्पात्मकता विद्यार्थियों को कष्टप्रद लगती है, वही विशेषता प्रारंभ से ही रचनाकार कवियों को प्रिय रही है। जितने अधिक विकल्प उतना आसान काव्य निर्माण की प्रक्रिया। प्राकृत में लौकिक और पारलौकिक काव्यों की प्रचुर मात्रा इसका प्रमाण है। संस्कृत अलंकार-शास्त्री भी रस, अलंकार, छंद आदि को परिभाषित करके उदाहरण हेतु प्राकृत काव्यों का ही प्रयोग करते हैं। इससे सिद्ध है कि प्राकृत काव्य न केवल उच्चस्तरीय थे, अपितु जनप्रिय भी थे।

संस्कृत नाटककार महाकवि कालिदास आदि अपने नाटकों में विभिन्न प्रकार के पात्रों के लिए विविध प्राकृतों का प्रयोग करते थे। इन नाटकों का मंचन भी राज-दरबारों में, अनेक गांव, नगर आदि में होता था। नाटकों को देखने के लिए आज के सिनेमाघरों के समान ही अपार जनसमूह एकत्रित होता था और आनंद से सराबोर भी हो जाता था। भारत का कोई भी प्रांत हो, वहां की जनता इन सभी प्रकार की प्राकृतों को समझती थी। श्रेष्ठ पात्र राजा आदि संस्कृत भले ही बोलें, लेकिन वे भी इन प्राकृतों को अच्छे से समझते थे।

भगवान महावीर और उनके सभी परंपरागत उपदेशक शिष्य ग्रंथकार आचार्यगण लोकतंत्र के समर्थक थे। उन्होंने सर्वजनहित को ध्यान में रखते हुए प्राकृत को ही अपने उपदेशों की भाषा बनाया। आज भी समस्त धर्म-गुरु स्थानीय भाषा में ही प्रवचन करना पसंद करते हैं। क्योंकि यह संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है। अतः सिद्ध है कि प्राकृत भाषा हजारों वर्ष पूर्व से ही संप्रेषण का शक्तिशाली माध्यम के रूप में प्रचलित रही है।

प्राकृत केवल भाषा नहीं है अपितु भारत की संस्कृति है। अनेकता में एकता... विविधता में एकरूपता... अनेकांत-स्याद्वाद सा स्वभाव भारत में इस भाषा के प्रचलन से ही संभव हो सका। अलग-अलग उच्चारण, कथन-शैलियाँ, विविध विकल्पों के प्रयोग आदि के कारण अनेकता होते हुए भी परस्पर अर्थबोध की दृष्टि से समानता प्राकृत में है। मागधी अथवा शौरसेनी प्राकृत बोलने वालों को पैशाची या अवंती का शिक्षण नहीं देना पड़ता था।

प्राकृत केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, अपितु मुक्ति का कारण भी है। प्राकृत में केवल मनोरंजन ही छुपा नहीं है, यह तो मनो-मालिन्य का मंजन/भंजन भी कराने में समर्थ है। आज भी गृहत्यागी हो या गृहस्थ, प्राकृत भाषा में ही प्रतिक्रमण, सामायिक, दैनिक पाठ, स्तोत्र, स्तुति मंत्र-जाप आदि करना पसंद करता है। प्राकृत में केवल रचित साहित्य की विपुलता ही नहीं है, अपितु साहित्यिक उद्देश्यों की पूर्ति एवं उच्चस्तरीयता भी है। प्राकृत पूज्य है, प्राकृत में लिखने वाले प्रणाम के योग्य हैं और यहाँ तक कि प्राकृत को समझने वाले भी प्रशंसनीय हैं।

प्राकृत भाषा अध्ययन की आवश्यकता किसको और क्यों?

बृहत्तर भारत की ऐतिहासिक और प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक धरोहरों को जो जानना, खोजना अथवा प्राप्त करना चाहता है, वह प्राकृत अवश्य पढ़े। भगवान महावीर और गौतम बुद्ध का जो साक्षात्कार करना चाहता है, वह प्राकृत

पढ़े। ऋषियों, मुनियों, आचार्यों के आध्यात्मिक, कल्याणकारी, जीवनोपयोगी उपदेशों को जो समझना चाहता है, वह प्राकृत पढ़े। लोकोक्ति, मुहावरे, सुभाषित, सूक्तियों से जो आनंदित होना चाहे, वह प्राकृत पढ़े।

खगोल, भूगोल के रहस्यों को उद्घाटित करने के लिए प्राकृत पढ़ें। ज्योतिष, वास्तु, निमित्त-ज्ञान आदि के लिए प्राकृत पढ़ें। गणित, रसायन-शास्त्र, योग, चिकित्सा-शास्त्र के लिए प्राकृत पढ़ें। गीत, संगीत, छंद, अलंकार, उपमा, उत्प्रेक्षा के लिए प्राकृत पढ़ें। हिंदी, गुजराती, मराठी आदि 80% भारतीय भाषाओं की विकास यात्रा का आकलन करने के लिए प्राकृत पढ़ें। प्राचीन राजा महाराजाओं के शिलालेख, कीर्तिस्तंभों के लेख आदि को समझने के लिए प्राकृत पढ़ें। स्व-पर के उपकार, हित, कल्याण के लिए प्राकृत पढ़ें।

क्या प्राकृत भाषा का अध्ययन सिर्फ जैनों के लिए जरूरी है?

भारत में दो संस्कृतियाँ प्रायः समकालीन होकर प्रचलन में हैं। वैदिक और श्रमण। यह भ्रम है कि वैदिक संस्कृति की मूल भाषा संस्कृत और श्रमणों की प्राकृत है। यह सर्वमान्य सत्य है कि श्रमण परंपरा का प्रारंभिक लिखित और उपलब्ध विपुल साहित्य प्राकृत में है। पर यह भी सत्य है कि वैदिक साहित्य का प्राचीनतम साहित्य अर्थात वेद, लौकिक संस्कृत में नहीं लिखा गया, अपितु वैदिक संस्कृत अथवा छान्दस भाषा में लिखा गया है। और वेदों की यह भाषा संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत के अधिक निकट है।

भाषा विज्ञानियों का तो कहना यह भी है कि इस वैदिक संस्कृत का संस्कारित स्वरूप जो शिक्षित वर्ग के द्वारा आद्दत हुआ, वह संस्कृत कहलाया और तथाकथित इस शिक्षित वर्ग के अतिरिक्त जो सामान्य जनता के द्वारा अपनाया गया, वह प्राकृत भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अतः मात्र जैनों के लिए ही प्राकृत अध्ययन जरूरी हो ऐसा नहीं है। बौद्धों की पालि भाषा भी प्राकृत भाषा समूह का हिस्सा है। वैदिक संस्कृति के लिए भी प्राकृत जरूरी है। प्राकृत में लौकिक साहित्य के साथ - साथ जैनेतर धर्मशास्त्र भी लिखे गए हैं।

अतः प्रत्येक भारतीय के लिए प्राकृत भाषा का अध्ययन जरूरी है। प्राकृत साहित्य का वास्तविक रसास्वादन करने के लिए प्राकृत सीखना अनिवार्य है। संस्कृत-छाया, हिंदी अथवा अंग्रेजी अनुवाद से शब्द-बोध भले ही हो जाए, परंतु भाव-भासना और लेखक के शब्द-रचना रूप संसार का अनुभव तो अन्य भाषांतर से मिलने वाला नहीं है। प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध णमोकार मंत्र का प्रभाव भाषांतर अथवा अनुवाद में नहीं है। प्राकृत भाषा के मूल स्वरूप में ही है। वह ही मंत्र है, ध्यान का बीज है, कर्म निर्जरा का साधन है और परंपरा से मोक्ष का कारण भी है।

भारत सरकार को भारतीय पुरा-संपदा के संरक्षण और पुनरुत्थान के लिए प्राकृत अध्ययन पर भी ठोस प्रयास करने चाहिए। सामाजिक स्तर पर जैन समाज को भी प्राकृत के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ प्राकृत संरक्षण हेतु नेतृत्व प्रदान करना चाहिए। जिनवाणी हमारे लिए सदा से पूज्य है। जिन-भाषा को भी वही स्थान देना अब जरूरी हो गया

है। संपूर्ण जैन समाज को अपनी मूलभाषा / सांस्कृतिक भाषा / धार्मिक भाषा के रूप में प्राकृत भाषा को प्रतिष्ठित करना चाहिए।

वैसे तो प्राकृत भाषा सभी के लिए जननी तुल्य परमोपकारी है, तथापि मेरे लिए, हम सभी जैनों के लिए तो यह विशेष है ही। दूसरा इसके महत्त्व को समझ न भी पाए, लेकिन हमको तो समझना ही चाहिए।

प्राकृत भाषा अध्ययन का उद्देश्य क्या?

भाषाई अध्ययन का मूल उद्देश्य प्रायः परस्पर व्यवहार और अर्थबोध ही होता है। विशेष रुप से विद्यार्थी भाषा अध्ययन करते हुए निम्न तीन योग्यताओं को प्राप्त करना चाहता है। 1. Read, 2. Write, 3. Speak. पढ़ना, लिखना और बोलना। इन तीनों योग्यताओं में अर्थ-बोध का भाव उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होता जाता है। प्रायः पढ़ना आसान होता है, उससे कठिन लिखना और धाराप्रवाह बोलना और अधिक कठिन होता है।

प्राकृत भाषा की दृष्टि से विचार करने पर इसमें कुछ अंतर प्रतीत होता है। प्राकृत भाषा में शब्दरूप, क्रियारूप और कृदंतों के प्रयोगों में अनेक विकल्प पाये जाते हैं। जैसे- संबंधक भूत कृदंत में ऊण/ ऊणं/ दूण/ दूणं/ अ/ य/ उं/त्ता आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। उनको हस क्रिया में जोड़ने पर अन्त्य स्वर अकार के स्थान पर इकार और एकार का विकल्प से आदेश होता है। हंसकर इस अर्थ को बताने के लिए मात्र हस क्रिया से ही 16 विकल्प उपलब्ध हैं। हसिऊण/ हसिऊणं/ हसिदूण/ हसिदूणं/ हसिअ/ हसिय/ हसिउं/ हसित्ता/ हसेऊण/ हसेऊणं/ हसेदूण/ हसेदूणं/ हसेअ/ हसेय/ हसेउं/ हसेत्ता। अर्धमागधी आदि के प्रत्यय अन्य और भी हैं। संबंधक भूत कृदंत अव्यय होता है, इसमें लिंग पुरुष और वचन आदि का अंतर नहीं है। वर्तमान कृदंत आदि जो अव्यय नहीं हैं, विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, उनकी बहु-विकल्पात्मकता का तो क्या कहना।

इस दृष्टि से विचार करने पर पढ़ना कठिन हो जाता है और लिखना व बोलना अपेक्षाकृत सरल प्रतीत होता है। प्राकृत भाषा में लिखने अथवा बोलने के लिए एक या दो विकल्पों का सीखना भी पर्याप्त हो सकता है। तथापि लेखन एवं वक्तृत्व में उत्कृष्टता लाने के लिए सभी विकल्पों का ज्ञान अनिवार्य है। प्राकृत ग्रंथों का पठन और अर्थबोध कर पाना थोड़ा जटिल हो जाता है, प्रायः उनके लिए जो एक या दो विकल्पों को ही जानते हैं। प्राकृत ग्रंथों का लेखन विभिन्न आचार्यों और कवियों के द्वारा सुदीर्घ समय से चला आ रहा है। प्राकृत साहित्य में प्रायः इन सभी विकल्पों को आसानी से देखा जा सकता है। अतः सामान्य दृष्टि से भी प्राकृत ग्रंथों का रसास्वादन करने के लिए इन सभी विकल्पों को ध्यान में रखना परम आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान परिस्थितियों में प्राकृत का बोल-चाल प्रायः शून्य है। प्राकृत लेखन का उद्देश्य भी विरले ही बना पाते हैं। 99% श्रावकों का प्राकृत भाषा अध्ययन के पीछे एकमात्र उद्देश्य पूर्वाचार्यों के महान ग्रंथों को पढ़ना, समझना और भाव-भासना करना ही है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में प्राकृत भाषा में लेखन का चलन विद्वानों और साधकों में

देखा जा रहा है, तथापि प्राकृत भाषा के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्राकृत साहित्य, आगम साहित्य, शास्त्र आदि का अध्ययन ही है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए कठिन ज्ञानसाधना और तदनुरूप अभ्यास नितांत अनिवार्य है।

प्राकृत भाषा अध्ययन की विधि क्या है?

वर्तमान में प्राकृत भाषा अध्ययन की दो विधियाँ - पारंपरिक और आधुनिक का प्रचलन है। पारंपरिक विधि में संस्कृत के माध्यम से प्राकृत पढ़ाई जाती है। संस्कृत के शब्दों, क्रियाओं आदि में वर्ण-लोप, वर्ण-आगम, वर्ण-परिवर्तन, आदेश आदि माध्यमों से प्राकृत भाषा के शब्द बनाए जाते हैं/ सिद्ध किए जाते हैं और फिर उनमें प्राकृत के विभक्ति, प्रत्यय आदि लगाए जाते हैं। अनेकों बार विभक्ति-रूप, क्रिया-रूप, कृदंत-रूप सहित संस्कृत शब्द आदि को सीधे प्राकृत में परिवर्तित किया जाता है। जैसे- बालक - इसमें क-ग-च-ज-... इत्यादि सूत्र के द्वारा ककार का लोप कर देने से अकार शेष रह जाता है। बालअ - यह प्राकृत भाषा का शब्द सिद्ध हो गया।

यह पारंपरिक विधि प्राकृत वैयाकरणों की देन है। उन्होंने प्राकृत शब्दों की सिद्धि करने के लिए संस्कृत को मूल बनाकर प्राकृत भाषा की प्रवृत्ति और स्वरूप को प्रकट किया। पहले कहा जा चुका है कि प्राकृत और संस्कृत यह दोनों ही पुरातन काल से प्रचलन में थी। प्राकृत बोलने वालों को प्राकृत सिखाने का कोई औचित्य नहीं था। संस्कृत-निष्ठ विद्यार्थी कैसे प्राकृत के उत्कृष्ट साहित्य को पढ़े, यह विचार मन में रखते हुए प्राकृत वैयाकरणों ने संस्कृत सूत्रों की रचना की। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। संस्कृत का अध्ययन करने वाले शिक्षित कहे जाते थे। शिक्षा का अधिकार आज के समान सभी को नहीं था। महिलाओं को प्रायः पढ़ाया नहीं गया। राजा आदि उच्चकुलीन और अध्यापन-धर्मी एक विशिष्ट वर्ग ही शिक्षण का पात्र था, संस्कृत आदि पढ़ता था। शेष सभी बहुसंख्यक प्रजा प्राकृत भाषा से ही परस्पर व्यवहार कर संतुष्ट थी।

यह पारंपरिक विधि आज भी कतिपय विश्वविद्यालय और संस्थानों में प्राकृत भाषा अध्ययन का एकमात्र साधन है। संस्कृत भाषाई पृष्ठभूमि से विहीन छात्रों और श्रावकों के लिए पिछले 100 वर्षों से भी अधिक से पहले ही प्रयास प्रारंभ हो गए थे। आधुनिक शैली में प्राकृत शब्दकोषों का निर्माण, व्याकरण-सूत्रों का उल्लेख किए बिना ही नियमों/ परिवर्तनों का संकलन, शब्द-रूप, क्रिया-रूप, कृदंत-रूप को स्मरण कराने की परंपरा आदि ने इस और सभी को आकृष्ट किया। फलस्वरूप प्राकृत भाषा अध्ययन की आधुनिक विधि विकसित हुई।

आधुनिक विधि में संस्कृत की सहायता लिए बिना ही सीधे हिंदी, गुजराती, मराठी आदि भारतीय भाषाओं अथवा अंग्रेजी आदि के माध्यम से प्राकृत भाषा का अध्ययन कराया जाता है। शब्द निर्माण की जटिल प्रक्रिया को छोड़ते हुए आगे बढ़ जाते हैं। यह प्रक्रिया बिल्कुल वैसी ही है जैसे वर्तमान में अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं का अध्ययन विद्यालय और विश्वविद्यालयों में हो रहा है। CAT = बिल्ली। कैट शब्द निर्माण अंग्रेजी में कैसे हुआ, इससे कोई

खास फर्क नहीं पड़ता है। शब्द और उसका अर्थ याद कर लो। सतत अभ्यास और शब्दकोषों के द्वारा नए शब्दों का ज्ञान हो जाने से इन भाषाओं में निर्बाध गति आ जाती है।

प्राकृत भाषा अध्ययन की इस आधुनिक विधि के द्वारा भाषा के सभी मूलतत्त्वों को विद्यार्थी अपनी जानी-पहचानी मातृभाषा में सीखता है। प्राकृत सीखने के लिए उसे पहले संस्कृत नहीं सीखनी पड़ती है। विदेशी अध्येता भी इस माध्यम से प्राकृत को आसानी से समझ लेते हैं। व्याकरण के लंबे-लंबे शास्त्रों का अध्ययन किए बिना ही विद्यार्थी प्राकृत में पढ़ना, लिखना और बोलना सीख जाते हैं। प्रौढ़ता की दृष्टि से तदुपरांत इन व्याकरण ग्रंथों का अध्ययन भी उपयोगी होता है। कतिपय विश्वविद्यालय, दूरस्थ विश्वविद्यालय इस विधि से प्राकृत का अध्ययन करा रहे हैं। कुछ धार्मिक जैन पाठशाला और संस्थान भी इसका प्रयोग करते हुए जन-जन तक प्राकृत भाषा को पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं।

प्राकृत भाषा अध्ययन के वर्तमान केंद्र कौन से हैं?

अध्ययन केंद्रों को भी पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। जिन विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में अध्ययन करके लौकिक डिग्री प्राप्त करनी होती है, वे महाविद्यालय, विश्वविद्यालय अथवा मान्यता प्राप्त संस्थानों से शास्त्री, आचार्य, B.A., M.A. का अध्ययन करते हैं। प्रायः प्रारंभिक अवस्था में प्राकृत भाषा का सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स भी करते हैं। दूरस्थ शिक्षा और Online/ recorded audio व videos के माध्यम से भी प्राकृत भाषा के अध्ययन में तेजी आई है।

आधुनिक युग में social media को मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षण का भी केंद्र माना जा रहा है। इस दौर में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सैकड़ों / हजारों किलोमीटर की दूरी भी मायने नहीं रखती है। Youtube, Whatsapp, Facebook, Telegram आदि के माध्यम से देश-विदेश में बैठकर अपने समय और सुविधा के अनुसार अध्ययन हो सकता है। पाठ्यसामग्री भी डिजिटल माध्यमों से तुरंत प्राप्त हो जाती है।

प्राकृत भाषा के अध्ययन की दृष्टि से यह तकनीक वरदान की तरह सिद्ध हो रही है। प्राकृत भाषा के पारंपरिक केंद्र प्रायः नगण्य हैं। श्रावकों के मन में प्राकृत के प्रति ललक अपार है। वे वर्षों से इस हेतु प्रयासरत हैं। परंतु मजबूर और निराश होकर वंचित ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुछ वर्षों पूर्व जब Whatsapp के माध्यम से प्राकृत भाषा पढ़ाने का साहस किया तो आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए। मात्र दो-तीन माह में ही हजारों की संख्या में रुचिवान श्रावक और श्राविकाओं ने ग्रुप में जुड़ कर प्राकृत सीखना शुरू कर दिया। सैकड़ों उम्रदराज वरिष्ठ नागरिकों में भी प्राकृत सीखने की इच्छा / तमन्ना जागृत हो गई। इस विशाल जनसमूह को संभालने के लिए विविध आधुनिक संसाधनों का उपयोग किया। बताते हुए हर्ष हो रहा है कि प्राकृत भाषा अध्ययन के लिए समर्पित मेरे Youtube channel "प्राकृत प्रशिक्षण **Dr. Pulak Goyal**" पर 650 से अधिक videos हो चुके हैं। लाखों views के साथ जिज्ञासु श्रावक गण हजारों घंटे का watch time पूरा कर चुके हैं। 6000 से अधिक subscribers भी हैं।

Telegram पर प्राकृत सर्टिफिकेट कोर्स का पूर्ण अध्यापन गृहकार्य व्यवस्था सहित परीक्षा विधि से युक्त बनाया जा चुका है। प्राकृत की एक व्यक्तिगत App भी लॉन्च हो चुकी है। संभवतः विशुद्ध रूप से प्राकृत भाषा के लिए किया जा रहा यह सर्वाधिक लोकप्रिय digital पुरुषार्थ है।

उपसंहार : प्राकृत भाषा अध्ययन अध्यापन की प्रेरणा

अब यह आवश्यक नहीं है कि आप किसी विश्वविद्यालय में उच्च पद पर स्थित होकर ही प्राकृत भाषा का अध्ययन करा सकते हैं। अब यह भी जरूरी नहीं है कि प्राकृत पढ़ने के लिए किसी बड़े संस्थान की खोज करनी पड़े। आधुनिक विधि और आधुनिक माध्यमों ने प्राकृत के पठन-पाठन को आसान बना दिया है। जो प्राकृत भाषा को पढ़ा सकते हैं, वे संकोच ना करें। किसी भी माध्यम से प्राकृत भाषा और साहित्य को पढ़ाना प्रारंभ करें। प्राकृत भाषा अध्ययन का यह स्वर्ण युग है। अनेक गंभीर शिक्षक इस और रुचि लेकर प्रयास कर रहे हैं। अनेक नवीन रचनाएं भी प्राकृत में लिखी जा रही हैं। प्राकृत पढ़ने वालों की कमी नहीं है। आप और हम बस इस हेतु कृत-संकल्प होकर मात्र सक्रिय हो जाएं।

"पाइय-कव्वस्स नमो"

(डॉ. पुलक गोयल)
प्राकृत प्रचारक
मूकमाटी, MIG 244
शिवनगर, दमोहनाका, जबलपुर 482002 (म. प्र.)
m. 9314591397